प्राक्कथन

भारतीय संस्कृति एक अनिरोध्य प्रवाह है जिसका मन्द्र निर्घोष युगों से संसार में मुखरित हो रहा है । उस की गति को अवरुद्ध करने केलिये चट्टानें चाहे बीच में आती हों, लेकिन वे उस की अनर्गलता का भंग करने में सफल हुई प्रतीत नहीं होती । उलटे बाधायें उस की गति को बढाने में ही सहायक रही है । भारत की संस्कृति की इस चिरसुरक्षा का कारण इतिहास के विभिन्न युगों में यहाँ जन्मे महापुरुष हैं । भारतीय संस्कृति की प्रवाह गति में सुनायी देनेवाला निर्घोष इन सत्यदर्शी महापुरुषों की अमृतवाणियों का है । ऐसा देखा जाता है कि इतिहास को जिस किसी संक्रमण सन्धी में भारतीय संस्कृति खतरे में पडी है, किसी महान गुरु अथवा आचार्य ने जन्म लेकर उस को विनाश से बचाया है ।

गोस्वामी तुलसीदास और श्रीनारायणगुरु ऐसे ही दो महापुरुष हैं जो भारतीय इतिहास के दो भिन्न युगों में पैदा हुए थे और जिनका महान जीवन और वचन अपने समय की जनता के ही नहीं आगामी अनेक पीढ़ियों के मार्ग को आलोकित करने में सक्षम है । मध्य युग के महान भक्त कवि एवं ऋषि तुलसीदास का कर्मक्षेत्र उत्तरभारत था । महान दार्शनिक, क्रान्तिकारी एवं कवि श्रीनारायण गुरु का कार्यक्षेत्र दक्षिण भारत । तुलसीदास सोलहवीं शताब्दी में जीवित थे । नारायण गुरु का जन्म उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुआ था । उन्नीस सौ अठाईस में गुरु को महासमाधि हुई थी । परन्तु देश और काल के इस व्यवधान के बावजूद, भारतवर्ष को एक ही महान आध्यात्मिकता को, जीवन आदर्श को साकार बनानेवाले युगपुरुषों के रूप में दोनों इतिहास में विराजमान हैं । उन्होंने तपोनिरत , साधनापूत जीवन से सत्य का दर्शन किया । समाज के सामने विश्व-मानविकता का आदर्श उपस्थित

किया । नये जीवन मूल्यों के सहारे समकालीन जीर्ण निश्चेतन समाज में प्राणों की पुनःप्रतिष्ठा की । जनता को प्रेम, त्याग, सहिष्णुता और समन्वय भावना की शिक्षा दी । तुलसीदास और श्रीनारायण गुरु का आविर्भाव समान परिस्थितियों में हुआ था । गोस्वामी तुलसीदास का युग पराधीनता और सांस्कृतिक अपचय का युग था ।

विदेशी आक्रमणों और गृहयुद्धों के कारण खतरे में पडी देश की चिरपुरातन संस्कृति और आदर्शों को बचाने का जो काम तुलसीदास ने उत्तर भारत में किया वही काम दक्षिण भारत में आधुनिक युग में श्रीनारायण गुरु ने किया । पुरोहिताई के स्वार्थ से सृष्ट निरर्थक आचारों से समाज ग्रस्त हो चुका था । धार्मिक अनुशासन खतरे में पड गया था । नारायण गुरु ने अपने जीवन और कर्मों से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन की शंखध्वनि मुखरित की । राजनीतिक क्षेत्र भी गुरु के जीवन और कार्यों से प्रभावित हुआ । ऐसे दो महापुरुषों की कविता के दर्शन और भक्ति का तुलनात्मक अध्ययन ही प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का विषय है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध छः अध्यायों में विभक्त है । प्रथम अध्याय का विषय "गोस्वामी तुलसीदास और श्रीनारायण गुरु की जीवनी, व्यक्तित्व और कृतित्व" है । इस में हमने दोनों आध्यात्मिक कवियों के आविर्भाव युग की राजनीतिक , सामाजिक , धार्मिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए उन के व्यक्तित्व स्वरूप की झांकी प्रस्तुत की है । दोनों की कृतियों का संक्षिप्त परिचय भी इस अध्याय में दिया गया है ।

द्वितीय अध्याय में तुलसीदास और नारायण गुरु की कविता के दार्शनिक विचारों का विश्लेषण और तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का

प्रयास हमने किया है। इसके आमुख के रूप में भारतीय-दर्शन का अतिसंक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत किया है । ब्रह्म , जीव, माया, जगत् , इन्द्रियाँ और मन, कर्म, ज्ञान, योग और मुक्ति ही वे दार्शनिक तत्त्व हैं जिन का विश्लेषण और तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत अध्याय में हम ने किया है । साथ ही इस बात की ओर भी संकेत किया गया है कि दार्शनिक विचार के किन-किन संदर्भों में दोनों कवियों ने मौलिकता दर्शायी है ।

तीसरे अध्याय में "तुलसीदास और श्रीनारायण गुरु के भक्ति विचारों का विवेचन" किया गया है । तुलसी के भक्ति संबन्धी विचारों को प्रस्तुत करने के पहले वैष्णव धर्म की पृष्ठभूमि और मध्य युग के भक्ति आन्दोलन का, तथा श्रीनारायण गुरु के भक्ति संबन्धी विचारों का विवेचन करने के पहले दक्षिण के शैव धर्म की पृष्ठभूमि और तमिष़ की शैव भक्ति परंपरा का संक्षिप्त विवरण दिया है । इस अध्याय में "तुलसीदास और श्रीनारायण गुरु के भक्ति संबन्धी विचारों का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है । भक्ति विचार के जिन विशेष संदर्भों में दोनों ने जो स्वतंत्रवीक्षण अपनाया है, उसकी ओर भी हमने संकेत किया है ।

चौथे अध्याय में "तुलसीदास और श्रीनारायण गुरु के सामाजिक दर्शनों का विवेचन" प्रस्तुत किया है । इस अध्याय के आमुख के रूप में सामाजिक जीवन से संबन्धित महान भारतीय आदर्श का उल्लेख किया है । तुलसीदास और नारायण गुरु के नीति-विषयक विचारों की इस अध्याय में चर्चा की गयी है । मनुष्यता का तिरस्कार करनेवाली जातिपांति का निराकरण करके, भारतीय नीतिशास्त्र का जो पुनर्मूल्यांकन गुरु ने किया इसकी भीप्रस्तुत अध्याय में चर्चा की है । तुलसी और गुरु के सामाजिक दर्शनों को

सबसे बडी विशेषता यह है कि दोनों महापुरुष व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में गुरु-कल्पना को महत्वपूर्ण मानते हैं । दोनों के सामाजिक दर्शनों में अंतर्गत प्रवृत्तियों पर तुलनात्मक दृष्टि से हमने विचार किया है ।

तुलसीदास और नारायण गुरु के द्वारा भारतीय जीवन के विविध क्षेत्रों में साधित महान समन्वय साधना का संक्षिप्त विवेचन और उसका तुलनात्मक अध्ययन ही पाँचवें अध्याय का विषय है ।

छठे अध्याय में संपूर्ण अध्ययन का मूल्यांकन किया गया है ।

गोस्वामी तुलसीदास और श्रीनारायण गुरु का आविर्भाव भारत के इतिहास के दो युगों और सुदूरवर्ती दो प्रांतों में हुआ था । फिर भी उन के जीवन , व्यक्तित्व और चिन्तन में अतिशय समानता द्रष्टव्य है । इस का कारण यही हो सकता है कि दोनों भारत की एक ही आध्यात्मिक संस्कृति के उत्तराधिकारी हैं । दूसरे कवियों और आध्यात्मिक आचार्यों का भी इस प्रकार तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है जो देश की भावात्मक एकता केलिये सहायक सिद्ध होगा और साथ ही यह भी साबित करेगा कि समाज के पुनर्निर्माण के कार्य में कैसे देश की आध्यात्मिकता हमारा साथ दे सकती है ।

****